अहले तसव्वुफ़

96

की फ़िक्री गुमराहियां

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफे अल्लाह के लिए हैं। जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं।

अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल0 पर आपकी आल औलाद व असहाब रजि0 पर।

व बअद!

तसव्वुफ़ के तअल्लुक से तीन फोल्डर 79 से 81 नम्बर तक तसव्वुफ़ के बर्ग व बार, तसव्वुफ़ व इल्मुल अअदाद और तसव्वुफ़ की तारीख और असरात पहले हम देख चुके है अब इस फोल्डर से हम अहले तसव्वुफ़ की फिक्री गुमराहियों को जानने की कोशिश करेगे इंशाअल्लाह

पहली सदी हिजरी के आखिर में जब यूनानी उलूम और फलसफियाना नज़रियात ने इस्लामी तालीमात को मुतआस्सिर करना शुरू किया तो तसव्वुफ़ ने भी धीरे–धीरे यूनानी अफलातूनियत, ईसाई रहबानियत और हिन्दी जोगीयत की शक्ल इख़्तियार करली। सूफ़िया की बुनियादी कमज़ोरी यह थी कि यह लोग न तो मुहद्दिस थे और न मुअर्रिख़। उस पर तुर्रा यह कि इनके नज़दीक तहक़ीक़ व तन्कीद अदब के ख़िलाफ़ थी। यूनानी फ़लसफे व अफ़कार और अक़्ली उलूम का मुक़ाबला करने के लिए इन्होंने 'इश्क़े इलाही' का जो नुस्ख़ा तैयार किया था। उस पर अमल करने का नतीजा यह निकला कि पासबाने अक़्ल के रूखसत होते ही इल्म का चिराग़ बुझ गया।

सूफ़िया ने दुनिया से किनारा कशी इख़्तियार कर ली और अपने मामलात इल्म व अक़्ल के बजाए दिल के हवाले कर दिये। उनके दिल में जो भी ख़्याल पैदा हुआ उसे इल्हाम समझ लिया और अपने खुद साख़्ता ख़्यालात को शरई अहकाम मान कर उनका इज़हार व तब्लीग़ करने लगे।

मसलन अबुतालिब मक्की अपनी किताब 'कूवतुल कुलूब' में लिखते हैं "मख़लूक़ के हक़ में ख़ालिक़ से ज़्यादा नुक्सानदेह कोई नहीं।" और यह कि "बअज़ सूफ़िया कहते हैं कि "अल्लाह तआला अपने औलिया को इस दुनिया में अपना जलवा दिखाता है।" **(तिलबीसे इबलीस–सफ़ा–229,232)**

इसी किताब में "उसने कई झूटी अहादीस बग़ैर सनद के नकल की और क़व्वाली को जाइज़ ठहराने के लिए ख़्वाबों को दलील बनाया। इसका दावा था कि 'समाअ' यानि क़व्वालियां सुनने से अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है।" **(तिलबीसे इबलीस–सफ़ा–319)**

अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन तिरमिज़ी ने सूफ़िया के लिए 'कश्फ' का अक़ीदा ईजाद किया और उसकी बुनियाद पर सूफ़िया को माफ़ूक़ अल बशर मख़लूक़ बना डाला। सूफ़िया को अम्बिया अलैहि0 का न सिर्फ हम रुतबा करार दिया बल्कि यह तक कह डाला कि अम्बिया अलैहि0 को जो बातें वहय के ज़रिये

मालूम होती थी। सूफ़िया को उन ग़ैबियात का इल्म बिना किसी वास्ते व वसीले के 'कश्फ़' से होने लगा। इस तरह कश्फ़ की ईजाद करके अबु तालिब मक्की ने एक नई शरीअत की बुनियाद रख दी।

बाद में आने वाले कुछ सूफ़िया ने 'चिल्ला' ईजाद किया और दलील इस झूटी रिवायत को बनाया कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया है "जो शख़्स 40 रोज़ तक अल्लाह के साथ इख़लास रखेगा तो यूं होगा और यूं होगा वग़ैरह–वग़ैरह।" जबकि इख़लास तो बन्दे पर हमेशा ज़रूरी है। क्या 40 रोज़ गुजर जाने के बाद बन्दे को अपने आमाल में रियाकारी (दिखावे) की इजाज़त है?

अबु अ0 रहमान सुलमी ने अपनी किताब "सुनन अल सूफ़िया" के आखिर में सूफ़िया के लिए नाच–गाने और अच्छी सूरत देखने को जाइज़ ठहराया और दलील इन झूटी रिवायतों को बनाया कि "तुम ख़ैर को अच्छी सूरतों के पास तलब करो।" और "तीन चीज़े आंखों की रोशनी को बढ़ाती है– (1) हरियाली (2) बहता पानी और (3) अच्छी सूरत देखना।"

इस शख़्स अबु अ0 रहमान के बारे में मुहम्मद बिन युसुफ नीशापुरी का कहना है कि "यह झूट बोलता था और सूफ़िया के लिए हदीसें गढ़ा करता था।" **(तिलबीसे इबलीस–सफा–01)**

'मज़हबे तसव्वुफ़' को तरतीब देने वालों में अ0 करीम बिन हवाज़िन कशीरी भी हैं। इन्होंने अपनी किताब 'किताबुर्रिसाला' में तसव्वुफ़ की यह इस्तेहालात गढ़ कर दर्ज की जैसे लाहूत–नासूत, फ़ना व बका वक़्त व हाल, वज्द व दजूद, सहू व सकर, जमाअ व तफरीक़, मुहासिरा व मुकाशिफ़ा, तकवीन व तमकीन और शरीअत व तरीक़त वग़ैरह इन इस्तेहालात की जो तशरीह व तफसीर कशीरी ने की थी, वह सभी अहले तसव्वुफ़ में रिवाज पा गई। फिर बाद के लोगों ने समाअ, वजद, रक्स और तालियां बजाना वग़ैरह सिफ़ात को जोड़ा तो कुछ ने तहारत व नजाफ़त की ज़्यादती करके इसे संवारा। इस तरह इस मज़हब में नई–नई चीज़े पैदा होती रहीं और शैख लोग अहले तसव्वुफ के लिए रियाज़त व इबादत के नये–नये तरीके निकालते रहे। जैसे ज़िक्रे जहर, चिल्लाकशी वग़ैरह फिर 'खानकाहें' वजूद में आईं। जहां इस मज़हब की तालीम व तरबीयत दी जाने लगी।

इन लोगों ने इसका नाम 'इल्मे बातिन' रखा और शरीअते मुहम्मदी को 'इल्मे जाहिर' का नाम दिया।

'कशीरी' का यह भी कहना था कि "सूफ़िया की दलीलें हर दलील से ज़ाहिर तर हैं और सूफ़ी मज़हब के क़वाइद हर मजहब के कायदों से मज़बूत है। क्योंकि लोग या तो अहले नक़ल व हदीस हैं या अहले अक़्ल व फ़िक्र जो चीज लोगों के लिए ग़ैब है, वह सूफ़िया के लिए ज़हूर व शहूद की हैसियत रखती है।"

'हारिस बिन असद मुहासबी 'जिसने तसव्वुफ़ के मौज़ूअ पर कई किताबें लिखीं ने अपनी एक किताब "किताबुर्रिआया फ़िल तसव्वुफ" में शरीअत की इस्तेलाह 'एहसान' को फलसफ़ायाना तसव्वुफ़ में बदल डाला। इसी ने सबसे पहले 'इख़लास' का अअला दर्जा यह बतलाया कि "अमल जन्नत पाने के लिए न किया जाए बल्कि सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया जाए।" नतीजा यह हुआ कि बाद के सूफ़िया जन्नत की तहक़ीर करने लगे। इसने यह भी लिखा कि "मूसा अलैहि0 से अल्लाह ने बग़ैर आवाज़ के बात की थी।"

अबु हामिद इमाम गज़ाली ने अपनी किताब "अल मुसफह बिल अहवाल" मे लिखा कि "सूफिया हालते बैदारी (जागते) में अम्बिया अलैहि0 की रूहों और फरिश्तों को देखते हैं, उनकी आवाज़े सुनते हैं और फायदे हासिल करते हैं।" इब्ने जौजी रह0 के मुताबिक इन्ही 'हजरत गज़ाली' ने अपनी किताब 'अहया अल उलूम' को सैकड़ों झूटी व बेअसल हदीसों से भर दिया। जिनके झूट होने को वह खुद नहीं जानते थे। इसकिताब मे उन्होंने लिखा कि "सितारा, सूरज और चांद जिन्हे इब्राहीम अलैहि0 ने देखा था। उनसे मुराद अनवार हैं जो अल्लाह तआला के हिजाब हैं। यह मशहूर चांद, सूरज व सितारे नहीं।" इब्ने जौजी रह0 कहते है कि "इमाम गज़ाली का यह कौल 'बातनिया' के कलाम की किस्म से हैं।"

(तिलबीसे इबलीस–सफा–230)

इमाम गज़ाली ने 'अहया अल उलूम में यह भी लिखा कि 'रियाजत से मुराद यह है कि दिल यकसू हो जाए और ऐसा तभी होगा जब इन्सान एक तारीक मकान मे अकेला रहे। अगर अन्धेरा न हो तो अपना सर गिरेबान में डाल ले या सर को चादर वगैरह से ढक ले। इस हालत में वह हक (अल्लाह) की आवाज सुनेगा और उसके जलाल का दीदार करेगा।" **(तिबलीसे इबलीस–सफा–261)**

मशहूर सूफी 'अबुनस्र सिराज' अपनी किताब 'लम्आ अल सूफिया' में लिखते हैं "हुलूली सूफिया के ख्याल में अल्लाह तआला अच्छी सूरतों में हुलूल किये हुए हैं।"

अबु बकर दैनूरी का बयान है कि एक शख्स के पास हल्लाज का खत मिला। जिसका उनवान था "रहमान व रहीम की तरफ से फलां बिन फलां को वाजेह हो " जिसे देखकर लोगों ने कहा कि "अभी तक तो तुम नबुवत का दावा करते थे, अब अल्लाह होने का भी करने लगे।" हल्लाज ने कहा कि "मैं रब होने का दावा नही करता। मगर हम लोगों (हल्लाज, इब्ने अता, अबु मुहम्मद जरीरी और शिबली) का यह मज़हब है कि "इन्सान कुछ भी नहीं कर सकता। बल्कि वह जो कुछ भी करता है उसका करने वाला हकीकत में अल्लाह है। ऐसे ही लिखने वाला तो अल्लाह है, हाथ तो सिर्फ एक जरिया है मगर जरीरी और शिबली इस अकीदे को छिपाते हैं।" **(तिलबीसे इबलीस–सफा–336–337)**

हल्लाज की बहू 'बिन्ते सहरी' ने बयान कियाकि

एक रात जब मैं छत पर सो रही थी तो हल्लाज मुझ से आकर लिपट गए। मैं घबरा कर उठी तो उन्होंने माफी मांगते हुए कहा कि मैं तो नमाज़ के लिए जगाने आया था। हम दोनों छत से नीचे उतरे तो उसकी बेटी ने कहा कि मेरे बाप को सज्दा करो। मैंने कहा भला कोई गैरूल्लाह को भी सज्दा करता है? तो हल्लाज बोला कि "एक अल्लाह आसमान पर है और एक जमीन पर।" **(तिलबी से इबलीस–सफा–237)**

• प्राफेसर युसुफ सलीम चिश्ती लिखते हैं कि "जुनैद बगदादी ने तौहीद के चार दर्जे बतलाए हैं (1) तौहीदे अवाम (2) तौहीदे उलैमा (3) तौहीदे ख्वास (4) तौहीदे खास अल ख्वास।"

(तारीख तसव्वुफ–सफा–237)

पांचवी सदी हिजरी के एक सूफी अब्दुल्लाह हरवी अपनी किताब 'मनाज़िल अस्सायरीन' के बाब तौहीद में लिखते हैं "आज तक किसी जबान ने भी ख्वाह नूह

अलैहि0 की, इब्राहीम अलैहि0 की मूसा अलैहि0 की, ईसा अलैहि0 की या मुहम्मद सल्ल0 की जबान ही क्यों न हो, अल्लाह की तौहीद बयान नहीं की।"

इब्ने कय्यिम रह0 कहते हैं कि "एक सूफी बुजुर्ग से लोगों ने जब यह कहा कि कुरआने मजीद तो आपके नज़रिये तौहीद को रद्द करता है तो उसने कहा "कुरआन तो पूरा का पूरा (न आऊजुबिल्लाह) शिर्क से भरा हुआ है। तौहीद तो वह है जो हम बयान करते हैं। " **(मदारिज सालिकीन–जिल्द–3 सफ़ा–136)**

अरब के मशहूर आलिमे दीन शैख अ0 रहमान अपनी किताब 'फजाएह अल सूफ़िया' के सफा 52 पर तसव्वुफ के शैखे अकबर मुहिय्युद्दीन इब्ने अरबी की किताब 'फुसुसुल हकम' से उसका यह कौल नकल करते हैं "इबलीस व फिरऔन दोनों 'आरिफ बिल्लाह' थे और उन्हें निजात मिलेगी। फिरऔन का इल्म अल्लाह के बारे में मूसा अलैहि0 से ज़्यादा था। और यह कि किसी भी चीज की इबादत दर हकीकत अल्लाह की ही इबादत है।" शैख आगे 'वहदतुल वजूद' के बातिल नजरिये के कायल सूफ़िया और इब्ने अरबी के पैरो कारों के बारे में लिखते हैं "आमतौर पर अहले तसव्वुफ यह अकीदा रखते हैं कि इबलीस तौहीद के एतेबार से कामिल बन्दा है और मखलूक में सबसे अफज़ल हैं क्योंकि उसने अल्लाह के अलावा किसी दूसरे को सज्दा नहीं किया था। इसीलिए अल्लाह ने उसे बख़्श दिया और जन्नत में दाख़िल किया। इसी तरह फिरऔन भी सूफ़िया के नज़दीक सबसे बड़ा मौहिद है क्योकि उसने 'अना रब्ब कुमुल अअला" कह कर यह जता दिया कि कायनात में मौजूद हर चीज़ मे अल्लाह है। इस तरह सूफ़िया के नज़दीक वह मोमिन है और जन्नत मे जाएगा।" **(फज़ाएह अल सूफ़िया–सफ़ा–47)**

सूफ़िया के नज़दीक शरीअत का इल्म जिसे वोह 'इल्मे जाहिर' का नाम देते हैं, एक बेकार चीज़ है। इन लोगों के ख़्याल में इल्म वही है जो बज़रिये बातिन हासिल होता है। इसीलिए यह लोग उलैमा की बुराई करने और उनका मज़ाक उडाने से भी नहीं चूकते थे। इब्ने जौज़ी रह0 अपने ज़माने छठी सदी हिजरी के सूफिया के बारे में लिखते हैं "सूफ़िया अगर किसी के बारे में सुनते है कि वह हदीस रिवायत करता है तो कहते हैं कि इन बेचारों ने अपना इल्म मरे हुए लोगों से लिया है और हमने अपना इल्म सीधे अल्लाह से हासिल किया है। लिहाजा अगर यह कहते है कि मेरे बाप ने मेरे दादा से रिवायत की तो हम कहते हैं मेरे दिल ने मेरे रब से रिवायत की।" **(तिलबीसे इबलीस–सफा–436)**

अल्लामा इब्ने जौज़ी रह0 ने 'तिलबीसे इबलीस' में लिखा है कि "सूफिया को पहला धोखा शैतान ने यह दिया कि उन्हें इल्म से बेजार किया। ताकि इल्म जो एक रोशनी है वह बुझ जाए तो अन्धेरे मे जिस तरह चाहे उन्हें टेढ़ा तिरछा ले जाए। फिर यह पट्टी पढ़ाई कि जब अमल ही मकसूद है तो इल्म की जरूरत क्या है? इसीलिए अहमद बिन अबि हवारी ने 30 सालों में हासिल किया इल्मी जखीरा दरिया मे बहा डाला। इसी तरह मुहम्मद बिन हुसैन के बयान के मुताबिक 'शिबली' ने किताबों से भरे 70 सन्दूक दरिया के हवाले कर दिये, जिन्हें खुद शिबली ने अपने कलम से लिखा था। **(तिलबीसे इबलीस)** यही शिबली जो सूफ़िया के बड़े औलिया मे शुमार होते हैं, की इल्म दुश्मनी का यह हाल था कि एक रोज इब्ने अहमद सफा के हाथ मे दवात देख कर कहने लगे कि अपनी सियाही मुझसे दूर करो, मुझको अपने दिल की सियाही काफी है।" **(तिबलीसे इबलीस–सफा–403)**

सूफिया ने जब इल्म से अपना नाता तोड लिया तो कुरआन व हदीस के वोह मतलब अपनी राय से निकाले जो गलत और गुमराह कुन थे।

मिसाल के तौर पर इब्ने अता से किसी ने इस आयत "फ नज्जयना क मिनल गम्मा व फत्तान्ना क फुतूना" यानि "हमने तुझ को गम से निजात दी और तुझे आज़माया" का मआनी पूछा तो उसने यह मतलब बतलाया "अल्लाह ने मूसा अलैहि0 से इर्शाद फरमाया कि हमने तुम्हारी कौम के गम से तुम को निजात दी और अपने अलावा सबसे अलग करके तुम्हें अपने फित्ने में मुब्तिला किया।"

मुहम्मद बिन अली ने "युहिब्बुत्तव्वा बीन" की तफ्सीर यह की कि "अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है, जो अपनी तौबा से तौबा करते हैं।" ज़नजानी ने कहा "व युहिब्बुर्रअदु बि हम्दि ही वल मलाइकतु मिन खी फतिहि "मैं" रअद से मुराद फरिश्तों की चीखें है, बिजली उनके दिलों की आहें हैं और बारिश उनके आंसू हैं।" सहल तस्तरी कहते हैं "वल जारिज़िल कुर्बा "से मुराद दिल है और, जारिल जुनुबि से नफ्स है। इब्ने अता ने "फअम्मा इन काना मिनल मुकर्रबीन। फरूहुन व रयहानुन व जन्नतु नईम "का यह मतलब बतलाया कि "रूह" के मआनी है अल्लाह का दीदार करना, "रयहान" उसका कलाम सुनना और 'जन्नत नईम' वह जगह है कि उसमें अल्लाह तआला से किसी चीज़ की आड़ (हिजाब) न हो।

सूरह युसुफ में युसुफ अलैहि0 के बारे में मिस्री औरतों का यह कहना "मा हाज़ा बशर" यानि युसुफ अलैहि0 आदमी नहीं। मगर सूफी मुहम्मद बिन अली ने इस का यह मआनी बयान किया कि "युसुफ अलैहि इस काबिल नहीं कि मुबाशेरत (संभोग)की तरफ उनकों बुलाया जाए।" अबु हमज़ा खुरासानी ने कहा कि "जन्नत में बहुत से लोगों से फरेब किया जाएगा। चुनांचे कहा जाएगा खुशी से खाओं पीयों। यह तुम्हारे गुज़रे ज़माने की खुश आमालियों का नतीजा है। उसने कहा कि अल्लाह तआला जन्नत वालों को खाने –पीने में लगा कर अपने से दूसरी तरफ फेर देगा। इससे बढ़ कर मक्र व फरेब और क्या होगा? **(तिलबीसे इबलीस–सफा–408)**

बा यज़ीद बुस्तामी ने कहा कि "मैं चाहता हूँ कि क़यामत कायम हो ताकि मैं अपना खैमा दोज़ख पर नसब करूं। इसलिए कि मैं जानता हूँ दोज़ख जब मुझे देखेगी तो सर्द पड़ जाएगी। इस तरह मैं मखलूक के लिए रहमत बन जाऊंगा।" अबुमूसा दबीली ने बयान किया कि मैंने बा यजीद को कहते सुना कि "जब कयामत कायम होगी और अहले जन्नत जन्नत में और दोज़ख वाले दोज़ख में दाख़िल हो जाएगें तो मैं अल्लाह से दरख्वास्त करूंगा कि मुझे जहन्नम में दाखिल कर दे। ताकि मखलूक को मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला की इनायत व लुत्फो करम अपने औलिया पर दोज़ख में है। **(तिलबीसे इबलीस–सफा–414)**

जहां एक तरफ सूफिया व नाम–निहाद औलिया का यह हाल है, वहीं हकीक़ी औलिया अल्लाह की यह हालत रही कि "एक दफा हजरत उमर रजि0 ने कअब रजि0 से फरमाइश की कि हमें खौफ की बातें सुनाओं तो कअब रजि0 ने फरमायाकि ऐ अमीरूल मोमिनीन। इन्सान से जिस कदर मुमकिन हो सके, उतना अमल करे। क्योंकि जब कयामत कायम होगी तो अगर आप 70 अम्बिया के आमाल लेकर भी उठेगें तो भी आपके आमाल नाकिस साबित होगे।(मुसनफ इब्ने अबि शैबा–35301, 35265)

यह सुनकर हज़रत उमर रजि0 देर तक सर झूकाए बैठे रहे। फिर जब

संभले तो सर उठा कर फ़रमाया–ऐ कअब! कुछ और बातें बतलाओं। कअब रजि0 ने फिर कहना शुरू किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! अगर दोज़ख में से बैल के नथने के बराबर सुराख़ मशरिक़ की तरफ खुल जाए और कोई शख़्स इन्तेहाई मग़रिब में हो तो इतने फ़ासले के बावजूद उसका दिमाग़ खौलने लगे। यहां तक कि उसकी गर्मी से बह निकले। हज़रत उमर रजि0 फिर काफी देर तक सर झुकाए बैठे रहें। जब कुछ संभले तो फिर कहा कि कअब और सुनाओ। कअब रजि0 ने कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन। क़यामत के दिन दोज़ख हश्र के मैदान में लाई जाएगी। उस रोज़ उसकी 70000 महारें होंगी और हर महार को 70000 फ़रिश्ते पकड़े होंगे। जब दोज़ख मैदाने हश्र से 100 बरस के फ़ासले पर पहुंचेगी तो एक सांस लेगी। जिसकी शिद्दत से हर मुक़र्रिब फ़रिश्ता और हर नबी व रसूल घुटनों के बल गिर कर पुकारेगा 'नफ़्सी–नफ़्सी' यानि ऐ मेरे रब! मुझे बचा, मुझे बचा। आज अपने सिवा मैं किसी के लिए दरख़्वास्त नहीं करता।" (तिर्मिजी 2573)

एक दूसरी रिवायत में है कि "जहन्नम जब मख़लूक़ से 100 साल के फ़ासले पर होगी तो एक सांस लेगी। जिसकी गर्मी की शिद्दत से मख़लूक़ के दिल उड़ जाएंगे। फिर जब दूसरा सांस लेगी तो तमाम मुक़र्रिब फरिश्ते, नबी व रसूल घुटनों के बल गिर पड़ेंगें और नफ़्सी – नफ़्सी पुकारेंगें और जब तीसरा सांस लेंगी तो दिल मुंह को उलट आएंगें, अक्लें ख़ब्त हो जाएंगी और हर शख़्स घबरा कर अपने आमाल को देखेगा। हत्ता कि हज़रत इब्राहीम अलैहि0 कहेंगें कि ऐ अल्लाह! आज मैं अपने अलावा किसी के लिए दर ख़्वास्त नहीं करता। ऐसे ही हज़रत मूसा अलैहि0 और ईसा अलैहि0 भी कहेंगें कि मैं अपने सिवा किसी के लिए कुछ नहीं मांगता। (मुसनफ अबिशैबा 25255, 35301)

जब यह हालत फरिश्तों और अम्बिया अलैहि0 की होगी जो गुनाहों की आलूदगियों से पाक गुज़रे है। फिर भी दोज़ख से इस कदर घबराएंगे तो दूसरे लोग किस गिनती में हैं? बा यजीद बुस्तामी का जहन्नम पर खेमा लगाना ताकि वह उनकी वजह से ठन्डी हो जाए। या दोज़ख में जाने की तमन्ना व दुआ करना अगर खुली गुमराही नहीं तो फिर क्या है? क्या यह जन्नत की नेअमतों और जहन्नम की हौलनाकियों से बे एतेमादी और उनका मज़ाक उड़ाना नहीं है?

तसव्वुफ़ के तअल्लुक़ से इन सिलसिलेवार फोल्डर्स को शाया करने का मकसद किसी के दिल को दुखाना या किसी पर छींटा–कशी करना हरगिज़ नहीं है। बल्कि आम मुसलमानों को इन खुराफ़ाती नज़रियात व बद अक़ीदगीयों से आगाह करना है जो ईमान और अक़ाइद को बर्बाद करने के लिए काफी हैं।

अल्लाह से दुआ है कि वह हम सभी को हर तरह के शिर्क व बिदआत और बद अक़ीदगीयों से महफ़ुज़ रखे। हमारी ख़ताओं व गुनाहों से दर गुज़र फरमाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

माख़ूज़
इस्लाम में बिदअत व ज़लालत
के मुहर्रिकात
डा0 अबु अदनान सुहैल

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9214836639,9887239649